खंड 'क' – कृतिका-2 (पूरक पाठ्यपुस्तक)

1 माता का अँचल

– शिवपूजन सहाय

पाठ का सार

प्रस्तावना–लेखक ने 'माता का अँचल' पाठ में शैशव-काल के शैशवीय क्रियाकलापों को रेखांकित किया है, जिसमें माता-पिता के स्नेह तथा शिशुमंडली द्वारा मिल-जुलकर खेले जाने वाले खेलों को उद्धृत किया है। लेखक ने स्पष्ट किया है कि शिशु का पिता उसके साथ भले ही अधिक समय बिताता हो, दोनों भले ही एक-दूसरे के साथ अत्यधिक स्नेह करते हों, किंतु आपदाओं में माँ के अँचल में ही शिशु को शरण मिलती है। ऐसे समय में पिता से अधिक माता की गोद प्रिय और रक्षा करने में समर्थ प्रतीत होती है।

बचपन से पिता के साथ अधिक–लेखक बचपन से ही पिता के साथ अधिक रहता था। माता से दूध पीने तक संबंध था। पिता जी नहा-धोकर पूजा पर बैठते, साथ ही लेखक को भी नहला-धुलाकर पूजा में शामिल कर लेते। माथे पर भभूत का तिलक लगाते। सिर पर लंबी-लंबी जटाएँ तो थीं, उन पर भभूत लगाने से लेखक बम-भोला बन जाया करता था। पिता जी प्यार से भोलानाथ कह पुकारा करते थे। जबकि लेखक का नाम तारकेश्वर नाथ था। मैं (लेखक) पिता जी को बाबू जी और माँ को मइयाँ कहकर पुकारता था। पिता जी रामायण का पाठ करते थे तो मैं उनके पास बैठा आईने में अपना मुँह निहारा करता था। पिता जी के देखने पर शर्माकर आईना नीचे रख देता था और यह देखकर पिता जी मुस्करा देते थे।

पिता जी की 'रामनामा बही' और राम-नाम की गोलियाँ–पिता जी पूजा-पाठ के बाद अपनी 'रामनामा बही' में राम-राम लिखते। इसके बाद कागज़ के छोटे-छोटे टुकड़ों पर राम-नाम लिखकर और उन्हें आटे की गोलियों में लपेटकर गंगा पर जाकर आटे की एक-एक गोली फेंककर मछलियों को खिलाते। उस समय मैं उनके कंधे पर बैठा होता था। पिता जी की गोली फेंकना देखकर मैं हँसा करता था। गंगा से जब लौटते तो पिता जी रास्ते में झुके पेड़ों की डालों पर बैठाकर (लेखक को) झूला झुलाते थे। कभी-कभी हमसे कुश्ती लड़ते थे और खुद नीचे गिर जाते थे और मैं उनकी छाती पर चढ़कर उनकी मूँछें उखाड़ने लगता था। वे मूँछें छुड़ाकर हँसते हुए मुझे चूम लेते थे। मुझसे खट्टा-मीठा चुम्मा माँगते थे। मैं उनके सामने अपने गाल कर देता था। एक खट्टा चुम्मा दूसरा मीठा चुम्मा लेते तो मूँछें गड़ा देते थे। मैं झुँझला पड़ता था और पिता जी बनावटी रोना रोते थे और मैं खिल-खिलाकर हँसने लगता था।

गोरस और भात का भोजन–पिता जी गोरस और भात को फूल के कटोरे में सानकर खिलाते थे। माँ और खिलाने की हठ करती थी। माँ पिता जी से कहती कि बच्चे को खिलाने का ढंग मर्द नहीं जानते। चार-चार दाने का कौर देने से बच्चा समझता है कि बहुत खा लिया है। बच्चे को भर-मुँह खिलाना चाहिए। माँ खुद खिलाने लगती और कहती कि महतारी के हाथ से खाने पर बच्चे का पेट भरता है। माँ खिलाती और कहती कि यह तोता के नाम का कौर है और यह कबूतर के नाम का कौर है ऐसे खूब खिला देती। तब पिता जी खेलने के लिए कहते। हम खेलने निकल जाते।

माँ तेल की उबटन करती तब तरह-तरह के खेल–कभी माँ अचानक पकड़ लेती और मेरे सिर पर कड़वा तेल डालकर सिर की मालिश करती। मैं छटपटाता और रोने लगता, पिता जी बिगड़ उठते किंतु माँ उबटकर ही छोड़ती थी। फिर माथे पर काजल की बिंदी लगाकर चोटी गूँथती, चोटी में फूलदार लट्टू बाँधती और रंगीन कुरता-टोपी पहनाकर कन्हैया बनाकर तैयार करती और मैं सिसकता रहता। पिता जी गोद में उठाकर बाहर ले आते। जैसे ही बाहर आते और इंतज़ार करते हुए बालकों के झुंड को देखते ही मैं सिसकना भूलकर पिता जी की गोद से उतरकर बालकों के झुंड में मिलकर खेलने लग जाता और तरह-तरह के नाटक करने लग जाता था। वहीं चबूतरे के एक कोने में सब खेल खेलते। पिता जी की नहाने वाली चौकी को लेकर उस पर सरकंडे के खंभे बनाते, कागज़ का टैंट लगाते, मिठाइयों की दुकान लगाते, मिट्टी के ढेलों के लड्डू बनाते, पत्तों की पूड़ी-कचौड़ी, गीली मिट्टी की जलेबी, फूटे घड़ों के टुकड़ों के बताशे बनाते और दुकान सजाते। उन्हीं ठीकरों और जस्ते के छोटे-छोटे टुकड़ों के पैसे बनाते। हम बच्चों में से ही खरीददार होते और हममें से ही दुकानदार होते थे। थोड़ी देर बाद मिठाई की दुकान बंद कर घरौंदा बनाते। रेत की मेड़ ही दीवार बनती, तिनकों का छप्पर, दातून के खंभे, दियासलाई की पेटियों की किवाड़, पानी का घी, बालू की चीनी, ऐसे ही घड़ों के टुकड़ों का प्रयोग कर ज्योनार तैयार करते। हम ही बच्चे पंगत में बैठते। पंगत में धीरे से आकर बाबू जी बैठ जाते थे। उनको बैठते देखते ही हम बच्चे घरौंदा बिगाड़कर भाग उठते थे। वह भी हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाते थे और पूछते–"फिर कब होगा भोज भोलानाथ?"

बच्चों की बारात और खेती–कभी बच्चे बारात निकालते। कनस्तरों का तंबूरा बजता, आम की उगी हुई गुठली को घिसकर शहनाई बनती। हममें से कोई दूल्हा, समधी आदि बनते थे। बारात चबूतरा के एक कोने से दूसरे कोने तक जाकर लौट आती थी। जिस कोने पर बारात

जाती थी उस कोने को आम के पत्तों और केलों के पत्तों से सजाया जाता था। लाल कपड़े से ढककर एक पालकी में दुलहिन बैठा दी जाती थी। बारात के लौटने पर पिता जी पालकी के कपड़े को ऊपर कर देखते थे तो हम हँसकर भाग जाते थे।

थोड़ी देर में बच्चों की मंडली खेती करने के लिए जुटती। बस चबूतरे के एक कोने पर घिरनी गड़ जाती और नीचे की गली कुआँ बन जाती। मूँज की पतली रस्सी बनाकर घिरनी पर चढ़ा, चुक्कड़ बाँध लटका दिया जाता। दो लड़के बैल बनते, पानी खींचने लग जाते। चबूतरा खेत बनता, कंकड़ बीज बनते। मेहनत से खेत जोते-बोए जाते। फसल तैयार हुई, हाथों-हाथ काट लेते। उसे एक जगह रखकर पैरों से रौंदते, मिट्टी के बने कसोरे से उसे ओसाते। मिट्टी के बने दीओं के तराजू बनाकर, तौलकर राशि तैयार कर देते। बाबू जी पूछते–''इस साल खेती कैसी रही भोलानाथ?'' हम सब राशि छोड़कर भाग उठते। इस तरह खेल खेलते देखकर बटोही भी रुक जाते थे।

पालकी को देख शरारत–अगर किसी दूल्हे के आगे पालकी को देख लेते थे तो खूब जोर से चिल्लाते थे–''रहरी में रहरी पुरान रहरी, डोला के कनिया हमार मेहरी।'' एक बार ऐसा कहने पर एक बूढ़े वर ने हम बच्चों को बहुत दूर तक खदेड़कर ढेलों से मारा था। उस खूसट-खब्बीस की सूरत लेखक को अब तक याद है। न जाने किस ससुर ने वैसा जमाई ढूँढ़ निकाला था। वैसी शक्ल का आदमी हमने कभी नहीं देखा।

जब मूसन तिवारी को चिढ़ाया–एक बार जोर की आँधी आई और हम सब आम के बाग की ओर दौड़ चले। आकाश काले बादलों से ढक गया। मेघ गरजने लगे, बिजली कौंधने लगी, ठंडी हवा सनसनाने लगी, पेड़ झूमने लगे और ज़मीन को छूने लगे।

हम बच्चे चिल्ला उठे–

एक पइसा की लाई
बाज़ार में छितराई,
बरखा उधरे बिलाई।

लेकिन वर्षा न रुकी, मूसलाधार वर्षा होने लगी। हम पेड़ों की जड़ से सट गए। थोड़ी देर में वर्षा थम गई। वर्षा थमते ही बाग में बिच्छू नजर आए। हम डरकर भाग चले। हममें एक बालक बैजू ढीठ था। हम भागे जा रहे थे। संयोग से रास्ते में मूसन तिवारी मिल गए। बैजू ने चिढ़ाया और कहा–

बुढ़वा बेईमान माँगे करैला का चोखा।

हम लोगों ने भी उसी के सुर में सुर मिलाते हुए चिल्लाना शुरू कर दिया। मूसन तिवारी हम लोगों के पीछे दौड़े और हम अपने-अपने घर की ओर भाग चले। हमारे न मिलने पर तिवारी पाठशाला गए और वहाँ से गुरु जी ने हमें पकड़ने के लिए चार लड़कों को भेजा। जैसे ही हम घर पहुँचे, वैसे ही चार लड़के आ धमके। बैजू तो भाग गया और मैं पकड़ा गया, गुरुजी ने मेरी खूब खबर ली। बाबू जी को जैसे ही पता चला वे पाठशाला दौड़े चले आए, मुझे गोद में उठाया, पुचकारा और मैंने रोते-रोते आँसुओं से बाबू जी का कंधा तर कर दिया। वे गुरु जी से प्रार्थना कर मुझे घर ले चले और रास्ते में साथी लड़कों का झुंड मिला। वे ज़ोर से नाच और गा रहे थे–

''माई पकाई गरर गरर पूआ,
हम खाइब पूआ
ना खेलब जुआ।''

उन्हें देखकर हम रोना-धोना भूल गए, बाबू जी की गोद से उतर गए और लड़कों की मंडली में मिल गए और एक साथ मकई के खेत में घुस गए और चिड़िया उड़ाने लगे। एक भी चिड़िया हाथ नहीं आई। हमें चिड़िया उड़ाते देख गाँव के आदमी हँसते हुए कहने लगे–

''चिड़िया की जान जाए
लड़कों का खिलौना।''

फिर कहा–''सचमुच लड़के और बंदर पराई पीर नहीं समझते।''

चूहे के बिल से साँप निकला–एक बार टीले पर चूहे के बिल को देखकर हम बिल में पानी उलीचने लगे। उससे चूहा तो निकला नहीं; साँप निकल आया। हम डरे और रोते-चिल्लाते भाग चले। जहाँ-तहाँ गिरे। सारा शरीर लहूलुहान हो गया पैरों के तलवे काँटों से छलनी हो गए। मैं घर की ओर भागा। बाबू जी ओसारे में हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे, उन्होंने बहुत पुकारा, पर मैंने माँ की गोद में शरण ली। मैं उनके अँचल में छिप गया। माँ सब काम छोड़कर रो पड़ी और भय का कारण पूछने लगी। कभी अंग भरकर दबाती और कभी मेरे अंगों को अपने अँचल से पोंछकर चूम लेती बड़े संकट में पड़ गई। झटपट हल्दी पीसकर लगाई। मैं साँ-साँ करते हुए माँ के अँचल में छिपा जा रहा था। घर में कुहराम मच गया। सारा शरीर काँप रहा था। रोंगटे खड़े हो गए थे। आँखें खोलना चाहते थे पर आँखें खुल नहीं रही थीं। मेरे काँपते हुए होंठों को देखकर माँ रोती और बड़े लाड़ से गले लगाती।

इसी बीच बाबू जी दौड़े आए। माँ की गोद से मुझे लेने लगे। पर मैंने माँ के अँचल की प्रेम और शांति के चँदोवे की छाया न छोड़ी।

शब्दार्थ

पृष्ठ संख्या 1

अँचल–गोद, आँचल। **मृदंग**–एक तरह का वाद्य-यंत्र। **तड़के**–भोर, सवेरा। **भभूत**–राख। **दिक् करना**–परेशान करना। **लिलार**–ललाट, मस्तक। **त्रिपुंड**–एक प्रकार का तिलक जिसमें ललाट पर तीन आड़ी या अर्द्ध चंद्रकार रेखाएँ बनाई जाती हैं। **आइना**–दर्पण। **निहारा**–देखा।

पृष्ठ संख्या 3

शिथिल–कमज़ोर। **उतान**–पीठ के बल लेटना। **फूल**–एक प्रकार की मिश्र धातु जो चमकदार होती है। **गोरस**–गाय का दूध। **सानकर**–मिलाकर। **अफ़र जाना**–पेट भर जाना। **ठौर**–जगह। **मरदुए**–आदमी। **महतारी**–माता।

पृष्ठ संख्या 4

कड़वा तेल–सरसों का तेल। **बोधकर**–सराबोर कर। **बाट-जोहना**–इतज़ार करना। **हमजोली**–साथी। **चँदोआ**–छोटा शामियाना। **बटखरा**–वस्तुएँ तौलने का बाट। **घरौंदा**–घर, निवासस्थान। **ज्योनार**–भोज, दावत। **पंगत**–पंक्ति। **जीमने**–खाने के लिए। **भोज**–भोजन का आयोजन।

पृष्ठ संख्या 5

तंबूरा–एक वाद्य यंत्र। **अमोला**–गुठली से उगता हुआ आम का छोटा-सा पौधा। **ओहार**–पर्दे के लिए डाला हुआ कपड़ा। **निरखना**–देखना। **कसोरा**–मिट्टी का बना छोटा कटोरा। **मोट**–पानी खींचने के लिए बना चमड़े का बड़ा-सा थैला। **कियारी**–छोटा खेत। **ओसाना**–भूसा-अनाज को अलग-अलग करना। **बटोही**–राही।

पृष्ठ संख्या 6

रहरी–अरहर। **नौ दो ग्यारह होना**–भाग जाना। **चिरौरी**–विनती।

पृष्ठ संख्या 7

पराई पीर–दूसरों का दर्द। **लहूलुहान होना**–खून से लथपथ होना।

पृष्ठ संख्या 8

ओसारा–बरामदा। **कुहराम मचना**–शोर मच जाना।

अभ्यास प्रश्नोत्तर

I. बहुविकल्पीय प्रश्न

1. लेखक के पिता उन्हें प्यार से किस नाम से पुकारते थे?
   (*i*) तारकेश्वरनाथ (*ii*) भोलानाथ (*iii*) भोलेशंकर (*iv*) दीनानाथ
2. **जब लेखक के बाबू जी रामायण का पाठ करते थे, तब वे उनकी बगल में बैठकर क्या करते थे?**
   (*i*) वे भी उनके साथ-साथ पाठ करते थे (*ii*) खेलते रहते थे
   (*iii*) आइने में अपना मुँह निहारा करते थे (*iv*) मइयाँ को आवाज़ लगाया करते थे
3. **लेखक के पिता जी अपनी 'रामनामा बही' पर राम-नाम कितनी बार लिखते थे?**
   (*i*) सौ बार (*ii*) पाँच सौ बार (*iii*) हज़ार बार (*iv*) दो हज़ार बार
4. **लेखक के पिता जी लेखक से कुश्ती लड़ते वक्त शिथिल क्यों पड़ जाते थे?**
   (*i*) थकान के कारण (*ii*) ढलती उम्र के कारण
   (*iii*) लेखक के बल को बढ़ावा देने के लिए (*iv*) भूख लगने के कारण
5. **लेखक की माँ के अनुसार बच्चे को किस प्रकार खिलाना चाहिए?**
   (*i*) थोड़ा-थोड़ा करके दिन में कई बार (*ii*) दिन में तीन-चार बार भर पेट
   (*iii*) जब भी खिलाएँ भर-मुँह के बड़े-बड़े कौर खिलाएँ (*iv*) इनमें से कोई नहीं
6. **लेखक 'कन्हैया' कैसे बन जाते थे?**
   (*i*) दूध-दही खाकर (*ii*) गइयों को चराकर
   (*iii*) गूँथी हुई चोटी में फूलदार लट्टू बँधवाकर तथा रंगीन कुरता-टोपी पहनकर
   (*iv*) साथियों के साथ बाँसुरी बजाकर
7. **लेखक अपने संगी-साथियों के साथ निम्नलिखित में से कौन-सा नाटक नहीं खेलते थे?**
   (*i*) दुकानदार तथा खरीदार का नाटक (*ii*) घरौंदा और भोज का नाटक
   (*iii*) बरात और खेती का नाटक (*iv*) मेला जाने का नाटक

8. **गुरु जी ने गिरफ़्तारी वारंट लेकर पाठशाला से चार लड़कों को क्यों भेजा?**

(*i*) लेखक तथा बैजू के पाठशाला नियमित नहीं आने की शिकायत मिलने के कारण

(*ii*) पाठशाला में मूसन तिवारी द्वारा शिकायत किए जाने के कारण

(*iii*) पाठशाला से भाग जाने के कारण (*iv*) इनमें से कोई नहीं

9. **बिल से बाहर साँप क्यों निकल आया?**

(*i*) बच्चों द्वारा बिल में पत्थर डालने के कारण (*ii*) बच्चों द्वारा बिल में पानी डालने के कारण

(*iii*) शिकार की तलाश में (*iv*) गणेश जी के चूहे की रक्षा के लिए

10. **लेखक को अपने आँचल में डर से काँपता देखकर उसकी माँ ने क्या किया?**

(*i*) वह ज़ोर से रोने लगी (*ii*) उसने सारा काम छोड़ दिया

(*iii*) घबराकर भय का कारण पूछने लगी (*iv*) उपर्युक्त सभी

उत्तर– 1. (*ii*) 2. (*iii*) 3. (*iii*) 4. (*iii*) 5. (*iii*) 6. (*iii*)
7. (*iv*) 8. (*ii*) 9. (*ii*) 10. (*iv*)

II. पाठ आधारित महत्वपूर्ण प्रश्न (3 अंक)

1. लेखक के पिता जी लेखक को पूजा में अपने साथ क्यों बैठाते थे?

उत्तर भोलानाथ को पूजा में बैठाने के निम्न कारण हो सकते हैं–

(*i*) भोलानाथ से अधिक प्यार करते थे।

(*ii*) लेखक के पिता जी धार्मिक प्रवृत्ति के थे। उनकी यही इच्छा रही होगी कि भोलानाथ भी धार्मिक प्रवृत्ति का बने।

(*iii*) शिशु भोलानाथ पर ईश्वर की कृपा बरसती रहे।

2. शिशु का नाम भोलानाथ कैसे पड़ा?

उत्तर शिशु का मूल नाम तारकेश्वर नाथ था। तारकेश्वर के पिता स्वयं भोलेनाथ अर्थात् शिव के भक्त थे। अपने समीप बैठा कर शिशु के माथे पर भभूत लगाकर और त्रिपुंडाकार में तिलक लगाकर, लंबी जटाओं वाले शिशु से कहने लगते कि बन गया भोलानाथ। फिर तारकेश्वर नाथ न कहकर धीरे-धीरे उसे भोलानाथ कहकर पुकारने लगे और फिर नाम हो गया भोलानाथ।

3. भोलानाथ पूजा-पाठ में पिता जी के पास बैठा क्या करता रहता था?

उत्तर पिता जी पूजा-पाठ करते, रामायण का पाठ करते और उनकी बगल में बैठा भोलानाथ आईने में अपने मुँह निहारा करता। पिता जी जब भोलानाथ की ओर देखने लगते तो शिशु भोलानाथ लजाकर और कुछ मुसकराकर आईना नीचे रख देता। ऐसा करने पर पिता जी मुस्करा पड़ते।

4. भोलानाथ के पिता जी की पूजा के कौन-कौन से अंग थे?

उत्तर भोलानाथ के पिता जी की पूजा के चार अंग थे–

(*i*) भगवान शंकर की विधिवत पूजा करना।

(*ii*) रामायण का पाठ करना।

(*iii*) 'रामनामा बही' पर राम-राम लिखना।

(*iv*) इनके अतिरिक्त छोटे-छोटे कागज पर राम-नाम लिखकर उन कागजों को आटे की गोली में लपेटकर उन गोलियों को गंगा में फेंककर मछलियों को खिलाना।

5. भोलानाथ माँ के साथ कितना नाता रखता था? वह अपने माता-पिता को क्या कहकर संबोधित करता था?

उत्तर भोलानाथ का माता के साथ दूध पीने तक नाता था। इसके अतिरिक्त वह माँ के पास ज़बरदस्ती रहता था क्योंकि माँ भोलानाथ के न चाहते हुए ज़बरदस्ती तेल लगाती तथा उबटन करती थी, जिससे भोलानाथ को माँ के पास रहना पसंद नहीं था। भोलानाथ अपनी माता को मइयाँ और पिता जी को बाबू जी कहता था।

6. भोलानाथ के गोरस-भात खा चुकने के बाद माता और खिलाती थी, क्यों?

उत्तर भोलानाथ को पिता जी गोरस-भात सानकर थोड़ा-थोड़ा करके खिला देते थे, फिर भी माता उसे भर-भर कौर खिलाती थी। कभी तोता के नाम का कौर, कभी मैना के नाम का कौर। माँ कहती थी कि बच्चे को मरदुए क्या खिलाना जानें। थोड़ा-थोड़ा खिलाने से बच्चे को लगता है कि बहुत खा चुका और बिना पेट भरे ही खाना बंद कर देता है।

7. भोलानाथ भयभीत होकर बाग से क्यों भागा?

उत्तर भोलानाथ बाग में टोली के साथ था। आकाश में बादल आए, बालकों ने शोर मचाया। वर्षा शुरू हुई और थोड़ी देर में ही मूसलाधार वर्षा हुई। बालक पेड़ों के नीचे पेड़ों से चिपक गए। जैसे ही वर्षा थमी, बाग में बिच्छू निकल आए। उनसे डरकर बच्चे भागे। उस भय से डरा हुआ बालक भोलानाथ भी बाग से भागा।

8. भोलानाथ को सिसकते हुए देख माँ का स्नेह फूट पड़ा। कैसे?

उत्तर भोलानाथ भय से सिसकता हुआ, भय से प्रकंपित भागा-भागा माँ की गोद में जा छिपा तो माँ भी स्नेहवश डर गई और डर से काँपते हुए भोलानाथ को देखकर ज़ोर से रो पड़ी। सब काम छोड़ अधीर होकर भोलानाथ से भय का कारण पूछने लगी। कभी अंग भरकर दबाती और कभी अंगों को अपने आँचल से पोंछकर चूम लेती। झटपट हल्दी पीसकर घावों पर लगाई। माँ बार-बार निहारती, रोती और बड़े लाड़-प्यार से उसे गले लगा लेती।

9. भयप्रकंपित भोलानाथ का चित्रण कीजिए।

उत्तर भोलानाथ साँप के भय से मुक्त नहीं हो पा रहा था। अपने हुक्का-गुड़गुड़ाते पिता जी की पुकार को भी अनसुनी कर वह घर के अंदर भागा। उसकी सिसकियाँ नहीं रुक रही थीं। साँ-साँ करते हुए माँ के अँचल में छिपा जा रहा था। सारा शरीर काँप रहा था। रोंगटे खड़े हो रहे थे। आँखें खोलने पर भी नहीं खुल रही थीं।

10. लेखक किस घटना को याद कर कहता है कि वैसा घोड़मुँहा आदमी हमने कभी नहीं देखा?

उत्तर लेखक बताता है कि बचपन में हम बच्चों की टोली किसी दूल्हे के आगे-आगे जाती हुई ओहारदार पालकी देख लेते तो खूब जोर से चिल्लाते थे। एक बार ऐसा करने पर एक बूढ़े वर ने बड़ी दूर तक खदेड़कर ढेलों से मारा था। उस खूसट-खब्बीस की सूरत लेखक नहीं भुला पाया। उसे याद कर लेखक कहता है कि न जाने किस ससुर ने वैसा जमाई ढूँढ़ निकाला था। लेखक ने वैसा घोड़मुँहा आदमी कभी नहीं देखा।

11. मूसन तिवारी ने बच्चों को क्यों खदेड़ा?

उत्तर बच्चे बाग में खेल रहे थे, वर्षा हुई तो बाग में बिच्छू निकल आए और बच्चे डरकर भागे। संयोग से रास्ते में मूसन तिवारी मिल गए, बैजू ने उन्हें चिढ़ाया–

'बुढ़वा बेईमान माँगे करैला का चोखा।'

बैजू के सुर में सबने सुर मिलाया और चिल्लाना शुरू कर दिया। तब मूसन तिवारी ने बच्चों को खदेड़ा।

12. गुरु जी ने भोलानाथ की खबर क्यों ली?

उत्तर मूसन तिवारी हमारे चिढ़ाने पर सीधे पाठशाला शिकायत करने चले गए। वहाँ से गुरुजी ने भोलानाथ और बैजू को पकड़ने के लिए चार लड़के भेजे। जैसे ही हम घर पहुँचे वैसे ही चारों लड़के घर पहुँचे। भोलानाथ को दबोच लिया किंतु बैजू नौ-दो ग्यारह हो गया और गुरु जी ने भोलानाथ की खबर ली।

13. गुरु जी की फटकार से रोता हुआ बालक भोलानाथ यकायक कैसे चुप हो गया?

उत्तर गुरु जी ने मूसन तिवारी को चिढ़ाने की सज़ा दी। पिता जी को पता चला तो पाठशाला आए। गोद में उठाकर पुचकारने दुलारने लगे। भोलानाथ ने रोते-रोते पिता जी का कंधा आँसुओं से तर कर दिया। घर जाते हुए रास्ते में साथियों का झुंड मिल गया। वे जोर-जोर से नाच-गा रहे थे–

माई पकाई गरर-गरर पूआ,
हम खाइब पूआ,
ना खेलब जुआ।

बालक भोलानाथ उन्हें देखकर यकायक रोना-धोना भूल गया और हठ करके बाबू जी की गोद से उतर गया और लड़कों की मंडली में मिलकर वही तान-सुर अलापने लगा।

14. बाबू जी और गाँव के लोगों ने ऐसा क्यों कहा कि लड़के और बंदर सचमुच पराई पीर नहीं समझते?

उत्तर लड़कों की मंडली खेत में दाने चुग रही चिड़ियों के झुंड को देखकर उन्हें दौड़-दौड़कर पकड़ने लगी। मगर एक भी चिड़िया हाथ नहीं आई। भोलानाथ खेत से अलग होकर गा रहा था–

राम जी की चिरई, राम जी का खेत,
खा लो चिरई, भर-भर पेट।

बाबू जी और गाँव के लोग तमाशा देख हँस रहे थे और कह रहे थे कि–

चिड़िया की जान जाए,
लड़कों का खिलौना।

यह दृश्य देखकर लोगों ने यह भी कहा था–"लड़के और बंदर सचमुच पराई पीर नहीं समझते।"

15. पाठ के आधार पर 'बाल-स्वभाव' का वर्णन कीजिए।

उत्तर बाल-स्वभाव में कोई भी सुख-दुख स्थायी नहीं होता है। बच्चे अपने मन के अनुकूल स्थितियों को देख बड़े-से-बड़े दुख को भूलकर सामान्य हो जाते हैं। उन्हें खेल प्रिय होते हैं। वे मात्र अनुकूल स्नेह को पहचानते हैं। भोलानाथ माता के उबटने पर सिसकता है, ऐसे ही गुरु के खबर लेने पर रोता है परंतु तुरंत ही बालकों की टोली देख उसके सिसकने में एकदम ठहराव आ जाता है और सामान्य

होकर खेलने में ऐसे मस्त हो जाता है कि लगता ही नहीं की थोड़ी देर पहले कुछ हुआ हो। अतः बाल-स्वभाव में अंतर्मन निर्द्वंद्व और निश्छल होता है।

16. 'माता का अँचल' पाठ में माता-पिता का बच्चे के प्रति जो वात्सल्य प्रकट हुआ है, उससे बच्चे में किन-किन गुणों का विकास होगा?

उत्तर माता-पिता द्वारा बच्चे के प्रति प्रकट किए गए वात्सल्य से बच्चे में निम्नलिखित गुणों का विकास होगा–

(*i*) **पारिवारिक जुड़ाव**–माता-पिता द्वारा प्रकट किए गए वात्सल्य से बच्चे में परिवार के प्रति जुड़ाव बढ़ता है। उसकी यह भावना बढ़कर उसमें राष्ट्र से जुड़ाव उत्पन्न करती है।

(*ii*) **माता-पिता से अटूट लगाव**–माता-पिता का वात्सल्य बच्चे में माता-पिता और परिवार के सदस्यों के प्रति अटूट लगाव पैदा करता है, जो बच्चे के नकारात्मक मूल्यों में कमी लाता है।

(*iii*) **सक्रिय सहभागिता**–माता-पिता का वात्सल्य बच्चे में सक्रिय सहभागिता की भावना पैदा करता है, जिससे सामाजिक व राष्ट्रीय सद्भाव में वृद्धि होती है।

(*iv*) **संकुचित से व्यापक दृष्टिकोण**–माता-पिता का वात्सल्य बच्चों के संकुचित दृष्टिकोण को व्यापक दृष्टिकोण में बदल देता है, जिससे उनमें परहित की भावना पैदा होती है।

17. बाबू जी पूजा-पाठ के बाद भोलानाथ को गंगा तक ले जाते तथा कई कामों में अपने साथ रखते। 'माता का अँचल' पाठ के आधार पर बताइए कि इससे भोलानाथ के किन-किन गुणों में प्रगाढ़ता आएगी?

उत्तर बाबू जी द्वारा भोलानाथ को गंगा तक ले जाने तथा कई कामों में अपने साथ लगाए रखने से उसके निम्नलिखित गुणों में प्रगाढ़ता आएगी–

(*i*) **जीव-जंतुओं से लगाव**–गंगा में मछलियों को आटे की गोलियाँ खिलाने से भोलानाथ में जीव-जंतुओं के प्रति लगाव पैदा होगा।

(*ii*) **नदियों के प्रति आस्था भाव**–भोलानाथ को पूजा के बाद गंगातट पर ले जाने से नदियों के प्रति आस्था का भाव पैदा होगा और वह उनके संरक्षण के प्रति सजग रहेगा।

(*iii*) **पेड़-पौधों की महत्ता स्वीकारना**–बाबू जी द्वारा भोलानाथ को पेड़ की डाल पर बिठाकर झूला झुलाने से भोलानाथ में पेड़-पौधों की महत्ता स्वीकारने का भाव प्रगाढ़ होगा।

(*iv*) **देश-प्रेम की भावना का उदय**–प्रकृति की विभिन्न वस्तुओं से प्रेम करते-करते भोलानाथ में देश के प्रति प्रेम की भावना का उदय होता जाएगा।

18. 'भोलानाथ और उसके साथियों के खेल, आज के खेल और खेल-सामग्री की अपेक्षा मूल्यों का विकास करने में अधिक समर्थ थे। 'माता का अँचल' पाठ के आधर पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर आज बच्चे अधिकांश खेल कमरों में रहकर अकेले खेलना चाहते हैं। इन खेलों में प्रयुक्त सामग्री मशीन निर्मित होती है। इसके विपरीत भोलानाथ के खेल खुले मैदानों में खेले जाते थे। इनमें पक्षियों को उड़ाना, खेती-बारी करना, बारात निकालना, भोज का प्रबंध करना आदि मुख्य थे। ये खेल साथियों के साथ खेले जाते थे, जिनसे **सहभागिता, सद्भाव, मेल-जोल (मित्रता)** आदि मूल्य विकसित होते थे। इसके अलावा इन खेलों की सामग्री में प्राकृतिक वस्तुएँ शामिल होती थीं, जिनसे **प्रकृति से जुड़ाव** और उसे **संरक्षित करने** के अलावा, समाज के साथ **राष्ट्र-प्रेम** का उदय एवं विकास होता था।

19. 'माता का अँचल' पाठ में वर्णित तत्कालीन विद्यालयों के अनुशासन से वर्तमान युग के विद्यालयों के अनुशासन की तुलना करते हुए बताइए कि आप किस अनुशासन व्यवस्था को अच्छा मानते हैं और क्यों? (*CBSE Sample Paper* 2017-18)

उत्तर 'माता का अँचल' पाठ में वर्णित तत्कालीन विद्यालयों का अनुशासन वर्तमान युग के विद्यालयों के अनुशासन से अच्छा था। तब के शिक्षक छात्रों से आत्मीयता रखते थे लेकिन पढ़ाई और अनुशासन के साथ कोई समझौता नहीं करते थे। छात्रों के अंदर शिक्षक तथा विद्यालय का डर रहता था, जिससे वे शैतानी और शरारत करने से डरते थे कि कहीं शिक्षक को पता न चल जाए और उन्हें दंड का भागी बनना न पड़े। वर्तमान समय में छात्रों के अंदर शिक्षक या विद्यालय का डर नहीं रहा है, जिस कारण बच्चे उच्शृंखल प्रवृत्ति के होते जा रहे हैं। विद्यालय परिसर के अंदर छात्र आपराधिक कृत्य करने से बाज नहीं आ रहे हैं। हत्या जैसी आपराधिक वारदातें हो रही हैं। बड़ी कक्षा के छात्र अध्यापक तक को मारने से नहीं हिचकते हैं। अत: हम कह सकते हैं कि तत्कालीन विद्यालयों का अनुशासन वर्तमान विद्यालयों से अच्छा था।

20. भोलानाथ के पिता उसके साथ तरह-तरह की गतिविधियों में शामिल होते थे, पर आज माता-पिता अपने बच्चों के साथ ऐसा नहीं कर पाते हैं, क्यों? इससे बच्चे में कौन-कौन से गुण अविकसित रह जाते हैं?

उत्तर भोलानाथ के पिता भोलानाथ के साथ पर्याप्त समय बिताते थे। वे भोलानाथ को नहला-धुलाकर अपने साथ पूजा में शामिल कर लेते थे। इसके बाद वे आटे की गोलियाँ लेकर गंगा तट पर जाते और मछलियों को खिलाते थे। भोलानाथ तब भी उनके साथ ही होता था। लौटते समय वे उसे बाग़ में पेड़ की डाल पर झुलाते। आज माता-पिता के पास समय का घोर अभाव है। वे अपनी बढ़ी हुई आवश्यकताएँ पूरी करने में लगे रहते हैं और कई-कई घंटे काम करते हैं। ऐसे में माता-पिता के पास समय ही नहीं

बचता कि वे अपने बच्चों के साथ गतिविधियों में शामिल हो सकें।

माता-पिता द्वारा बच्चों के साथ समय न बिताने से बच्चों में सहनशीलता, मिल-जुलकर रहने की भावना, त्याग संवेदनशीलता, परोपकार आदि गुणों का विकास नहीं हो पाता है।

21. भोलानाथ के पिता उसे लेकर गंगातट जाते और मछलियों को आटे की गोलियाँ खिलाते। उनके इस कार्य से भोलानाथ में किन-किन गुणों का विकास होता होगा?

उत्तर भोलानाथ के पिता पूजा करने के बाद कागज के छोटे-छोटे टुकड़ों पर राम-राम लिखते हैं और उन्हें आटे की गोलियों पर लपेटकर गंगातट पर ले जाते। वे इन गोलियों को एक-एक करके गंगा में फेंकते और मछलियों को खिलाते। उस समय भोलानाथ उनके कंधे पर बैठा होता और इस कार्य को अत्यंत ध्यान से निहारता।

उनके इस कार्य से भोलानाथ की निकटता अपने पिता से बढ़ती होगी और जीव-जंतुओं को करीब से देखने का अवसर मिलता होगा। इससे भोलानाथ के मन में जीव-जंतुओं के प्रति प्रेम, उनकी रक्षा के लिए सजगता, उन्हें विलुप्त होने से बचाने का चिंतन करने, नदियों को साफ़ रखने, उनकी महत्ता समझने जैसे उच्च गुणों का विकास होता होगा।

22. लेखक बचपन में मछलियों को आटे की गोलियाँ खाता देखकर खुश होता था, पर आज गंगा जैसी अनेक नदियों के प्रवाह में बदलाव आ गया है। आपके विचार से इस बदलाव का कारण क्या है? नदियों का स्वरूप पहले-सा बनाए रखने हेतु आप क्या-क्या सुझाव दे सकते हैं?

उत्तर लेखक बचपन में मछलियों को आटे की गोलियाँ खाता हुआ देखकर आनंदित होता था। आज गंगा जैसी अनेक नदियाँ अपना प्राचीन स्वरूप खो चुकी हैं। उनकी जलधारण क्षमता में क्रमशः कमी आती जा रही है। कई नदियाँ तो गंदा नाला बनकर रह गई हैं। इसके मुख्य कारण हैं– नदियों के जल का बिना सोचे-समझे स्वार्थपूर्ण प्रयोग करना, शहर के प्रदूषित नाले, फैक्ट्रियों का विषैला जल नदियों में मिलना, अपशिष्ट पदार्थों को जल में मिलने से न रोकना, सूखे फूल-मालाएँ, पॉलीथीन की थैलियों को नदियों के जल में मिलने देना तथा जलीय पौधों और घास की साफ़-सफ़ाई न करना आदि।

इसे रोकने के लिए नदियों की नियमित साफ़-सफ़ाई आवश्यक है। नदियों के प्रवाह को रोकने का प्रयास नहीं करना चाहिए। नदियों के जल में दूषित एवं जहरीला पानी नहीं मिलने देना चाहिए ताकि मछलियों एवं अन्य जलीय जंतुओं का जीवन बचा रहे। इससे नदियों का भी मूल स्वरूप बचा रहेगा।

23. 'माता का अँचल' पाठ में ग्रामीण परिवेश का चित्रण किया गया है। आप ग्रामीण जीवन व शहरी जीवन में क्या अंतर पाते हैं? (*CBSE Sample Paper* 2019-20)

उत्तर 'माता का अँचल' पाठ में लेखक ने ग्रामीण परिवार का चित्रण करते हुए वहाँ की जीवन-शैली का उल्लेख किया है। जहाँ लोगों के मध्य आत्मीयता की भावना है, लोग प्रकृति के करीब हैं। इसके विपरीत शहरों में लोग एकल जीवन व्यापन करने की प्रवृत्ति की ओर उन्मुख हो रहे हैं, उनमें आत्मीयता की कमी है।

अभ्यास प्रश्न पत्र

नाम– ..... **रोल नं.** .....

समय– 30 मिनट **कुल अंक– 12**

1. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **[3×4=12]**

(क) 'माता का अँचल' पाठ का कोई एक ऐसा प्रसंग कारण सहित लिखिए जो आपके दिल को छू गया हो।

.....

.....

.....

.....

.....

(ख) 'माता का अँचल' पाठ में माता-पिता का बच्चों के प्रति जो भाव व्यक्त हुआ है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(ग) 'माता का अँचल' पाठ के आधार पर बताइए कि वर्तमान समय में बच्चों की खेल-सामग्रियों में किस-किस प्रकार के परिवर्तन आए हैं? इससे उनके मूल्यों पर किस प्रकार के प्रभाव देखने को मिलते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

(घ) भोलानाथ को उनके पिता जी अपने साथ पूजा में क्यों बैठाते थे?

.....

.....

.....

.....

.....

(ङ) आपके विचार से भोलेनाथ अपने साथियों को देखकर रोना क्यों भूल जाता है?

.....

.....

.....

.....

.....

❑❑❑